श्री सुविधिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री सुविधिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सुविधिनाथ विधान

जय बोलिये

सुविधि के विधायक,
अनंतज्ञ आत्मज्ञायक,
मोक्षमार्ग प्रदायक,
तीर्थ के महानायक,
ग्रह-परिग्रह विघ्न विनाशक,
भक्त हृदय के महाशासक,
परमपूज्य
श्री सुविधिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(दोहा)

सुविधिप्रभु के जो कहे, भजन भक्ति के काव्य।
कभी महाकवि वह बने, शीघ्र मुक्ति संभाव्य॥

(लय : मैं तो कब से....)

मैं तो कब से तुमसे विनय करूँ, मुझे कब सँभालोगे प्रभो।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो॥
मैं तो कब से.....॥ 1॥

ये तो वो समय संसार में, जहाँ कोई भी रक्षा नहीं।
ना ज्ञान ना चारित्र की, मिलती कोई शिक्षा नहीं॥
मेरी श्रद्धा डोर पतंग कटती, मुझे कब बचाओगे प्रभो।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो॥
मैं तो कब से.....॥ 1॥

ये रिश्ते नाते द्वंद हैं सब, किसकी किसको है खबर।
जाना कहाँ आये कहाँ से, किसकी इस पर है नजर॥
निज से निज के मिलने का पथ, मुझे कब दिखाओगे प्रभो।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो॥
मैं तो कब से.....॥ 2॥

नहीं आरती का मैं दीप हूँ, नहीं अर्चना का मैं फूल हूँ।
नहीं वन्दना का मैं गीत हूँ, नहीं तेरे पद की मैं धूल हूँ॥
फिर अपने जिन निज धाम में, मुझे कब बुलाओगे प्रभो।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो॥
मैं तो कब से.....॥ 3॥

मुझ में बुराई हैं अनंतों, फिर भी बड़ा अभिमान है।
कुछ भी नहिं है पास केवल, भक्ति का ही गान है॥
'सुव्रत' परम सत्ता निधि, मुझे कब दिलाओगे प्रभो।
मैं भी रम न जाऊँ विश्व में, मुझे कब निकालोगे प्रभो॥
मैं तो कब से.....॥ 4॥

श्री सुविधिनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

पुष्पदन्त जिनराज जी, रहे मुक्ति के धाम।
पूजन के पहले उन्हें, बारम्बार प्रणाम॥

(सखी)

हे! नवमें तीर्थंकर जी, हे! पुष्पदन्त अरिहंता।
चैतन्यधाम के स्वामी, हे! परमपूज्य भगवन्ता॥
जो श्रमण संस्कृति के भी, संरक्षक संवाहक हैं।
जिनके श्री चरणों में हम, सादर नत मस्तक हैं॥

सर्वत्र आपका यश है, है महिमा खूब तुम्हारी।
तुम अतिशय खूब दिखाते, जय-जय हो नाथ तुम्हारी॥
जो जय-जय करें तुम्हारी, उसका हर बन्ध विलय हो।
फिर उसको क्या भय संकट, उसकी भी फिर जय-जय हो॥

बस इसी भावना से हम, जिन पूजन पाठ रचाते।
अब हृदय निलय में आओ, हम सादर तुम्हें बुलाते॥
हम दुखी उदास न होवें, कुछ ऐसा कर दो स्वामी।
हे! सुविधिनाथ परमेश्वर, तुमको सादर प्रणमामि॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं.....)

इस आतम ने मिथ्यामल, जबसे निज पर लिपटाये।
तो आतम तो ना झलका, पर जन्म मृत्यु दुख पाये॥
अब जन्म मृत्यु मिथ्या दुख, हो दूर नीर अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं.....।

रिश्ते नातों की ज्वाला, झुलसा देती हैं हमको।
फिर भी यह राग न हटता, क्या रोग लगा आतम को॥
यह राग द्वेष की ज्वाला, हो दूर गंध अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

पर में दुनियाँ तत्पर है, नहिं प्रभु की कोई लहर है।
नहिं अपनी कोई डगर है, यह सबसे बुरी खबर है॥
अब पर-पर की तत्परता, हो दूर पुञ्ज अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

जो अंतस्-जय करता वह, अपना मन सुमन बनाता।
वह अंतस्-पुष्प खिला के, निज ब्रह्म बाग महकाता॥
अब व्यसन बुराई सब ही, हो दूर पुष्प अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

हर वस्तु भोगकर डाली, पर तृप्ति कभी ना पाई।
नहिं आतम को चख पाये, नहिं पूजन पाठ रचायी॥
उपभोग-भोग के भव दुख, हो दूर चरु अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

हे! नाथ जहाँ तुम जैसा, आदित्य न हो तो क्या हो।
साहित्य न हो तो क्या हो, राहित्य न हो तो क्या हो॥
भय घोर अंधेरा संकट, हो दूर दीप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

कर्मों के खेल निराले, विधि लेख कौन वह टाले।
अब हम तो किसे पुकारें, जो हमको शीघ्र बचा ले॥
अब जेल खेल कर्मों का, हो दूर धूप अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

ये मधुर सरस फल सबको, सुख बाँटे खुद सहके गम।
हम काश कहीं हों ऐसे, तो सार्थक हो जिन-पूजन॥
अब सुख-दुख की आकुलता, हो दूर सुफल अर्पण कर।
हे! सुविधिनाथ प्रभु ऐसी, बस कृपा रहे हम सब पर॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

जल फल आदिक का मिश्रण, यह सुन्दर अर्घ बना के।
कई बार चढ़ा के लेकिन, अब तक कुछ भी ना पा के॥
हम आये हैं घबरा के, क्या रह गयी कमी हमारी।
क्यों दुखी परेशां हम हैं, क्यों मिली न मोक्ष सवारी॥

अब ऐसा अर्घ बना दो, अनमोल रहे जो सबसे।
हो कृपा कृपाकर अब तो, हम तुम्हें पुकारें कब से॥
अब सुनो प्रार्थना स्वामी, हम सबकी ओर निहारो।
हमें अपने पास बुलाके, चेतन का रूप सँभारो॥

(दोहा)

श्रद्धा से अर्पित करें, अर्घ्य झुका कर शीश।
धर्म धार टूटे नहीं, मिले यही आशीष॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

फागुन नवमी कृष्ण को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
सुविधिनाथ प्रभु आ वसे, जयरामा के गर्भ॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णनवम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एकम अगहन शुक्ल को, जन्मोत्सव त्यौहार।
राजा श्री सुग्रीव के, आये सुविधि कुमार॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

एकम अगहन शुक्ल को, कर परिग्रह की शाम।
सुविधि तपोत्सव से सजे, जिनको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कार्तिक शुक्ला दूज को, सुविधि हरे अज्ञान।
समवसरण तब लग गया, जिन्हें नमन अविराम॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लद्वितीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

भाद्र अष्टमी शुक्ल को, सुविधि बने सिद्धीश।
मुक्त हुए सम्मेद से, जिन्हें झुकायें शीश॥

ॐ ह्रीं भाद्रशुक्ल-अष्टम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

सुविधि प्रभु अनुपम रहे, दें इच्छित वरदान।
शाश्वत गुण पाने करें, नमन भजन गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

जिन भगवन् ने विशाल निर्मल, पूज्य मोक्ष पथ चला दिया।
अनेक शिष्यों के भविष्य को, मोक्ष स्वरूपी बना दिया॥
मोक्षमार्ग विधि रूप हुए जो, सुविधि-प्रभु जी उन्हें कहें।
हम भी मोक्षमार्ग की उत्तम, विधि को-पाने भक्ति करें॥ 1॥

फूलों जैसी सुन्दर जिनकी, दन्त पंक्तियाँ लहरातीं।
जिससे अनुपम मुख की शोभा, भक्त जनों के मन भाती॥
जो भव महा मरुस्थल में तो, छायादार वृक्ष जैसे।
वही पूज्य प्रभु पुष्पदन्त हैं, उनको भूलें हम कैसे॥ 2॥

जिनका तन अशांत रहता हो, वाणी आकुल व्याकुल हो।
सदाचार ना पलता जिनका, दुखिया जिनका संकुल हो॥

उपसर्गों से परीषहों से, जो हो जाते विचलित हों।
उन्हें मिले विधि सम्यक् यदि वे, सुविधि प्रभु के आश्रित हों॥ 3॥

महा पद्म नामक राजा जो, गुणी प्रजा को सुखी किया।
जिनको देकर ज्ञान भूत हित, प्रभु ने अंतर-मुखी किया॥
जिनके उपदेशामृत को पी, राजा चिन्तन मग्न हुआ।
भव भोगों से विरक्त होकर, मोक्षमार्ग संलग्न हुआ॥ 4॥

सोलहकारण भावनाएँ भा, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी।
और अन्त में समाधि व्रत कर, प्राणत सुर पदवी साधी॥
चले स्वर्ग से काकंदी पुर, राजा थे सुग्रीव जहाँ।
रही पट्टरानी जयरामा, हुआ आपका जन्म वहाँ॥ 5॥

इन्द्रों ने जन्मोत्सव करके, पुष्पदंत यह नाम रखा।
राज्य प्रेम पूर्वक भोगा फिर, जिनको उल्कापात दिखा॥
राजा को वैराग्य हुआ तो, लौकांतिक ने पद पूजे।
सुमति पुत्र को राज्य सौंपकर, सूर्य प्रभा से वन पहुँचे॥ 6॥

पुष्पक वन में पुष्पदंत ने, पुष्पवृष्टि मय तप ओढ़ा।
पंचमुष्टि केशलौंच किये फिर, पंच पाप परिग्रह छोड़ा॥
पंच महाव्रत धार लिए तो, रूप दिगम्बर संत हुए।
पुष्पमित्र आहारदान से, जिनशासन जयवंत हुये॥ 7॥

चार वर्ष छद्मस्थ बिताकर, नागवृक्ष के नीचे जा।
केवलज्ञान प्राप्तकर डाला, सुरनर पर्व करें गा-गा॥
समवसरण का अचिन्त्य वैभव, अहा! दिव्यध्वनि की शोभा।
मुख्य अठासी गणधर, के गुण, क्या? इससे सुन्दर होगा॥ 8॥

विहार कर सम्मेदशिखर के, उच्च कूट सुप्रभ पर जा।
हजार मुनि के साथ शाम को, मोक्ष महल में वसे अहा!

किन्तु कठिन यह मोक्ष महापथ, हमको सरल बना डाला।
अंतरंग बहिरंग नमन कर, जिनको शीश झुका डाला॥ 9॥

जय ऐसे प्रभु पुष्पदंत की, जय-जय से रज कर्म गली।
भूत डाकिनी ग्रह बाधा फिर, क्यों ना भागें ढूँढ गली॥
किन्तु शुक्र ग्रह शुक्र दिवस में, इन्हें बाँधते, कुछ पागल।
सुनो! इन्हीं के नाम मात्र से, क्षण में हो मंगल-मंगल॥ 10॥
अब इतनी सी विनय आपसे, संकट उलझन दूर करो।
इतना अगर न कर सकते तो, हममें साहस धैर्य भरो॥
लाभ हानि सुख दुख सब सहके, लीन रहें प्रभु चरणों में।
पूजन पाठ तभी सार्थक जब, 'सुव्रत' हों शिव शरणों में॥ 11॥

(सोरठा)

पुष्पदंत भगवान्, मगर चिह्नमय शोभते।
हम करने कल्याण, सादर गुण गा पूजते॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

पुष्पदंत स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, पुष्पदंत जिनराज॥

(पुष्पांजलिं....)

विधान अर्घ्यावली

(नवग्रह वर्णन)

नवग्रह से होकर दुखी, कर बैठे अन्याय।
सुविधिप्रभु को कर नमन, होंगे दोष पलाय॥

(जोगीरासा)

सूरज ग्रह की शांति हेतु जो, पद्मप्रभु की पूजा।
दिन रविवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥

नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 1॥

ॐ ह्रीं सूर्यग्रहबाधाविभ्रम निवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चन्दा ग्रह के शांति हेतु जो, चन्द्रप्रभ की पूजा।
सोमवार में जिन्हें बाँधना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥2॥

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहबाधाविभ्रमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

मंगल ग्रह की शांति हेतु जो, वासुपूज्य की पूजा।
मंगल दिन में उन्हें बाँधना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 3॥

ॐ ह्रीं मंगलग्रहबाधाविभ्रमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अरिष्ट बुध ग्रह शांति हेतु जो, आठों प्रभु की पूजा।
दिन बुधवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥4॥

ॐ ह्रीं बुधग्रहबाधाविभ्रमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अरिष्ट गुरु ग्रह शांति हेतु जो, आठों प्रभु की पूजा।
दिन गुरुवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥5॥

ॐ ह्रीं गुरुग्रहबाधाविभ्रमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

शुक्र ग्रह की शांति हेतु जो, पुष्पदन्त की पूजा।
शुक्र दिवस में उन्हें बाँधना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 6॥

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहबाधाविभ्रमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अरिष्ट शनि ग्रह शांति हेतु जो, मुनिसुव्रत की पूजा।
दिन शनिवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 7॥

ॐ ह्रीं शनिग्रहबाधाविध्नमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

राहु ग्रह की शांति हेतु जो, नेमिनाथ की पूजा।
दिन रविवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 8॥

ॐ ह्रीं राहुग्रहबाधाविध्नमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

केतु ग्रह के शांति हेतु जो, मल्लि पार्श्व की पूजा।
दिन रविवार बाँधकर रखना, देखो कार्य अजूबा॥
नवग्रह करें क्या उसका जिसके, नवमें प्रभु हों स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 9॥

ॐ ह्रीं केतुग्रहबाधाविध्नमनिवारणसमर्थ श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(नवधा भक्ति)

श्रावक बनकर व्रत पालन कर, गुरु आह्वानन करना।
भाव भक्ति से गद्–गद् होकर, परिक्रमा भी करना॥
'पड़गाहन' इस प्रथम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 10॥

ॐ ह्रीं पड़गाहनभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पड़गाहन कर सद्गुरुओं को, चौके में ले आना।
फिर प्रासुक शुद्धासन देकर, सादर उन्हें बिठाना॥
'उच्चासन' इस दूजि भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 11॥

ॐ ह्रीं उच्चासनभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

खुशी-खुशी फिर प्रासुक जल से, गुरु के चरण पखारो।
घृणा त्यागकर चरणोदक ले, अपना भाग्य सँवारो॥
'पद-प्रक्षालन' तीजी भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 12॥

ॐ ह्रीं पदप्रक्षालनभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अष्ट द्रव्य से झूम-झूम के, गुरुओं के गुण गाओ।
निज घर में गुरुवर को पाके, पूजन पाठ रचाओ॥
'गुरु-पूजन' इस चतुर भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 13॥

ॐ ह्रीं गुरुपूजनभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूजन कर फिर बैठ गवासन, गुरु को टेको माथा।
नमोस्तु को आशीष गुरु दें, उच्च उठा के हाथा॥
'प्रणाम' इस पंचम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी। कर्मजयी
प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 14॥

ॐ ह्रीं प्रणामभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

रागद्वेष भय मोह मान की, सारी गाँठें खोलो।
फिर आहार दान के पहले, मन की शुद्धि बोलो॥
'मन-शुद्धि' षष्ठम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 15॥

ॐ ह्रीं मनःशुद्धिभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कलह-विरह के शब्द न बोलो, हित-मित आगम-वाणी।
मिश्री मिश्रित कोयल जैसी, कर्णप्रिय कल्याणी॥
'वचन-शुद्धि' सप्तम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 16॥

ॐ ह्रीं वचनशुद्धिभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रासुक जल से स्नान करके, तन को शुद्ध बनाना।
जैनों का परिधान पहनकर, अनुशासित हो जाना॥
'काय-शुद्धि' अष्टम भक्ति के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 17॥

ॐ ह्रीं कायशुद्धिभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हो प्रासुक भोजन सामग्री, जो मर्यादा वाली।
नव कोटि से शुद्ध बनाना, धर्मवृद्धि तप वाली॥
नवमी जल-आहार शुद्धि के, उपदेशक जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 18॥

ॐ ह्रीं आहारजलशुद्धिभक्ति उपदेशक श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

(नव देवता)

घातिकर्म हर बने केवली, निर्दोषी भगवंता।
जगनायक पथ निर्देशक को, पूजें संत महंता॥
नवदेवों में श्री अरिहंता, प्रथम देव जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥19॥

ॐ ह्रीं शत्रुभयविनाशनसमर्थ श्रीअरहंतदेव श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सकलकर्म हर लोक शिखर पर, वसे निकल परमातम।
मुक्ति वधू के अनंत गुण के, निज रसिया शुद्धातम॥
नवदेवों में चिच्च देव प्रभु, सिद्ध दूसरे स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 20॥

ॐ ह्रीं कर्मोपद्रवभयविनाशनसमर्थ श्रीसिद्धदेव श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो छत्तीस गुणों के धारी, चतुस्संघ के स्वामी।
शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता, आगम के अनुगामी॥
नवदेवों में आचारज के, स्वामी के भी स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 21॥

ॐ ह्रीं दिशाशूलभयविनाशनसमर्थ श्रीआचार्यदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो पच्चीस गुणों के धारी, आत्म तत्त्व विज्ञानी।
आगम के रहस्य उद्घाटक, भक्तों के वरदानी॥
नवदेवों में उपाध्याय के, स्वामी के भी स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 22॥

ॐ ह्रीं षडयन्त्रभयविनाशनसमर्थ श्रीउपाध्यायदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जिनशासन की पता पताका, सब जग में फहराये।
जो अट्ठाईस मूलगुणधारी, ज्ञानी ध्यानी भाये॥
नवदेवों में साधु देव के, स्वामी के भी स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 23॥

ॐ ह्रीं मोहविभ्रमविनाशनसमर्थ श्रीसाधुदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सत्य अहिंसा दया भाव का, अंतर बाह्य धरम जो।
अनेकांत निश्चय व्यवहारी, सातों भंग वचन जो॥
नवदेवों में छटवे हैं जिन, धर्म देव के स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 24॥

ॐ ह्रीं धर्मविभ्रमविनाशनसमर्थ जिनधर्मदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दिव्य वचन अरहंत देव के, गणधर गुरु जो गूँथे।
जिन आगम के शास्त्र ग्रन्थ जो, दुनियाँ जिसको पूजे॥
नवदेवों में जिन आगम वह, पूज्य देव के स्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 25॥

ॐ ह्रीं साहित्यविभ्रमविनाशनसमर्थ जिनागमदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नवदेवों की जिन प्रतिमायें, कृत्रिम अकृत्रिम जो।
रत्न धातु पाषाण आदि की, देती पूज्य धरम जो॥
नवदेवों में चैत्य देव जिन, बतलाते कल्याणी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 26॥

ॐ ह्रीं मुद्राभयविनाशनसमर्थ जिनचैत्यदेवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

देव शास्त्र गुरु के आलय जो, जिन मंदिर कहलाते।
जिनमें आकर भक्त लोग सब, आत्म शांति भी पाते॥
नवदेवों में जिन चैत्यालय, देव रहे जिनस्वामी।
कर्मजयी प्रभु सुविधिनाथ को, बारम्बार नमामि॥ 27॥

ॐ ह्रीं विभावछायाभयविनाशनसमर्थ जिनचैत्यालय देवस्यस्वामी श्रीसुविधिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

पुष्पदन्त प्रभु सुविधिनाथ जी, दुनियाँ में हैं ऐसे।
जैसे तारों में है चँदा, कमल कीच में जैसे॥
ज्ञान शब्द सुर छन्द पंगु है, फिर गुण गायें कैसे।
अतः अर्घ से करें नमोस्तु, नदी सिन्धु को जैसे॥

(सोरठा)

शीघ्र करो स्वीकार, द्रव्य भाव वचनावली।
सुविधिनाथ कर्तार, खिलवादो चेतनकली॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

भक्ति भरी जिन अर्चना, करने का अरमान।
सही गलत का ज्ञान ना, फिर भी गायें गान॥

(पद्धरी)

जय सुविधिनाथ जिनवर महान्, जय पुष्पदंत तीर्थेश धाम।
जय कर्म विजेता जगन्नाथ, अब रखो भक्त के शीश हाथ॥ 1॥

जय त्याग मूर्ति करुणा निधान, हम को दे दो तुम वरद दान।
जो भी तुमको करते प्रणाम, वे स्वयं बने हैं तुम समान॥ 2॥

ऐसी करुणा की मिले छाँव, जो हमको देवें सिद्ध गाँव।

अब सुनो हमारी भी पुकार, हम क्यों भटके अब द्वार-द्वार॥ 3॥

भयभीत रहें क्यों नवग्रह से, जब नाता अपना जिनगृह से।
परिग्रह जिसका है मूलस्रोत, यह प्रभु कहते हो ओत-प्रोत॥ 4॥

हो जाए त्याग परिग्रह जिसका, क्या कर लेंगे नवग्रह उसका।
अतः परिग्रह का त्याग भाव, अब कृपा करो दो, जिनस्वभाव॥ 5॥

जो वीतराग विज्ञान देत, प्रारम्भ करो भक्ति समेत।
जिसमें नवधाभक्ति महान्, जो श्रावक के धार्मिक निशान॥ 6॥

फिर साथ-साथ नवदेव गान, जो जिनशासन में हैं महान्।
जो सुविधिनाथ से हुए प्राप्त, जिनमें झलके चैतन्य आप्त॥ 7॥

व्यवहार रहे साधन स्वरूप, जो निश्चय देता आत्मरूप।
हे! सुविधिनाथ तुम हो दयाल,अब मालामाल करो निहाल॥ 8॥

है 'सुव्रत' की निष्ठा अपार, सो किये भक्ति हो भव सुधार।
बस यही कृपा दो भक्तनाथ, छूटे न आपका कभी साथ॥ 9॥

(सोरठा)

सुविधि-सुविधि दातार, हमको भी विश्राम दो।
बस श्रद्धा उरधार, बारम्बार प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

पुष्पदंत स्वामी करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, पुष्पदंत जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति श्री सुविधिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्ध क्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, सुविधिनाथ विधान॥
दो हजार तेरह नवम्बर, गुरु अट्ठाईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

झूम², झूम² जिनवर
उतारें हम आरतिया, निहारें हम मूरतिया....
पुष्पदंत प्रभु आप हो, तीन लोक के नाथ हो।²
नवमें तीर्थंकर न्यारे, जिन्हें झुकायें माथ हो॥²
झूम.....॥ 1॥
सुग्रीव के लाड़ले, जयरामा के प्यारे हो।²
काकंदी जग के राजा, सबके नयन सितारे हो॥²
झूम.....॥ 1॥
पर की धूल नशायी है, आतम कली खिलाई है।²
निज रस के रसिया बनकर, धर्म ध्वजा फहराई है॥²
झूम.....॥ 1॥
पर के हर काँटे हर लो, नजर दया की भी कर दो।²
'सुव्रत' की अर्जी सुनके, अपने सम हमको कर लो॥²
झूम.....॥ 1॥